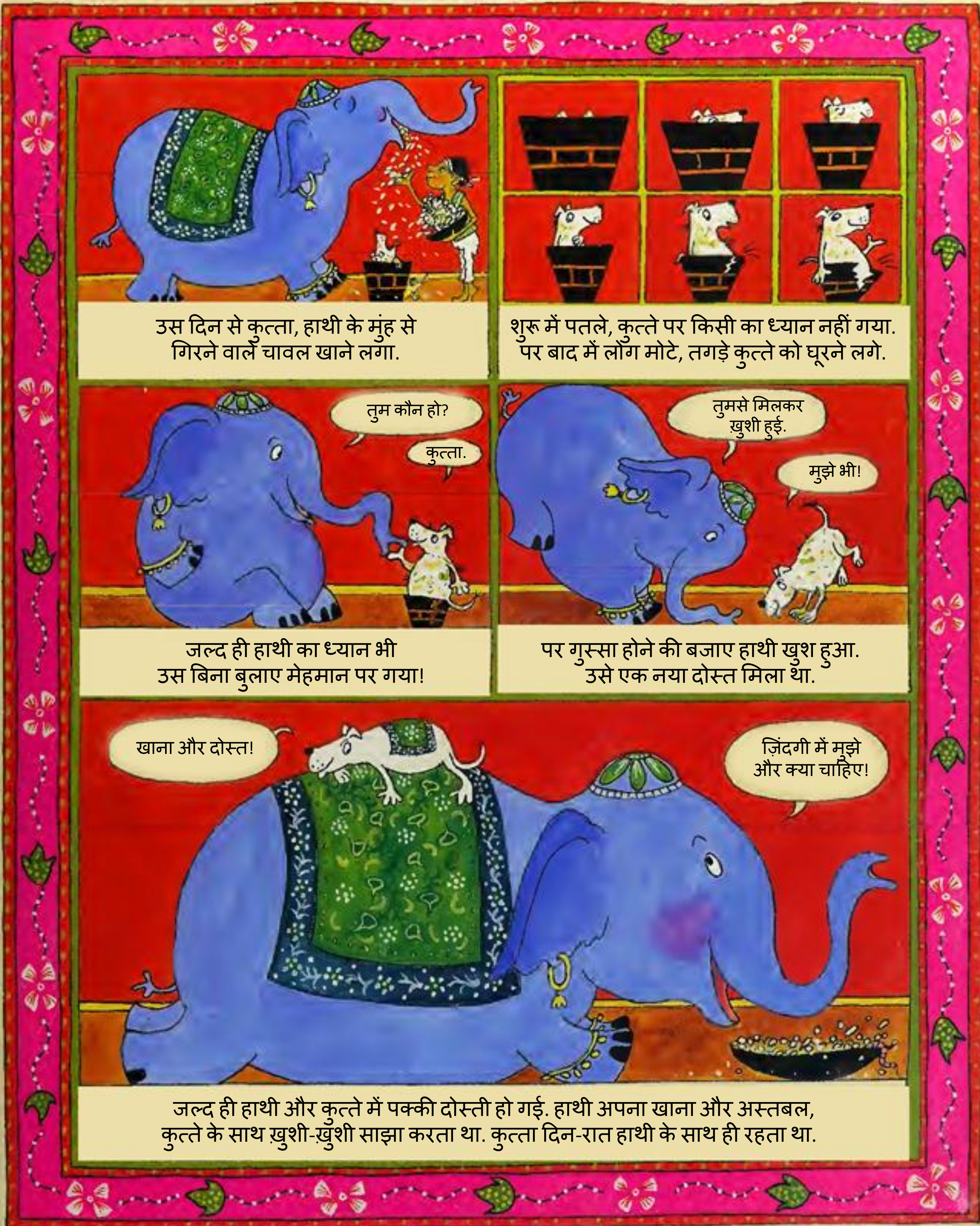
भारतीय लोककथा

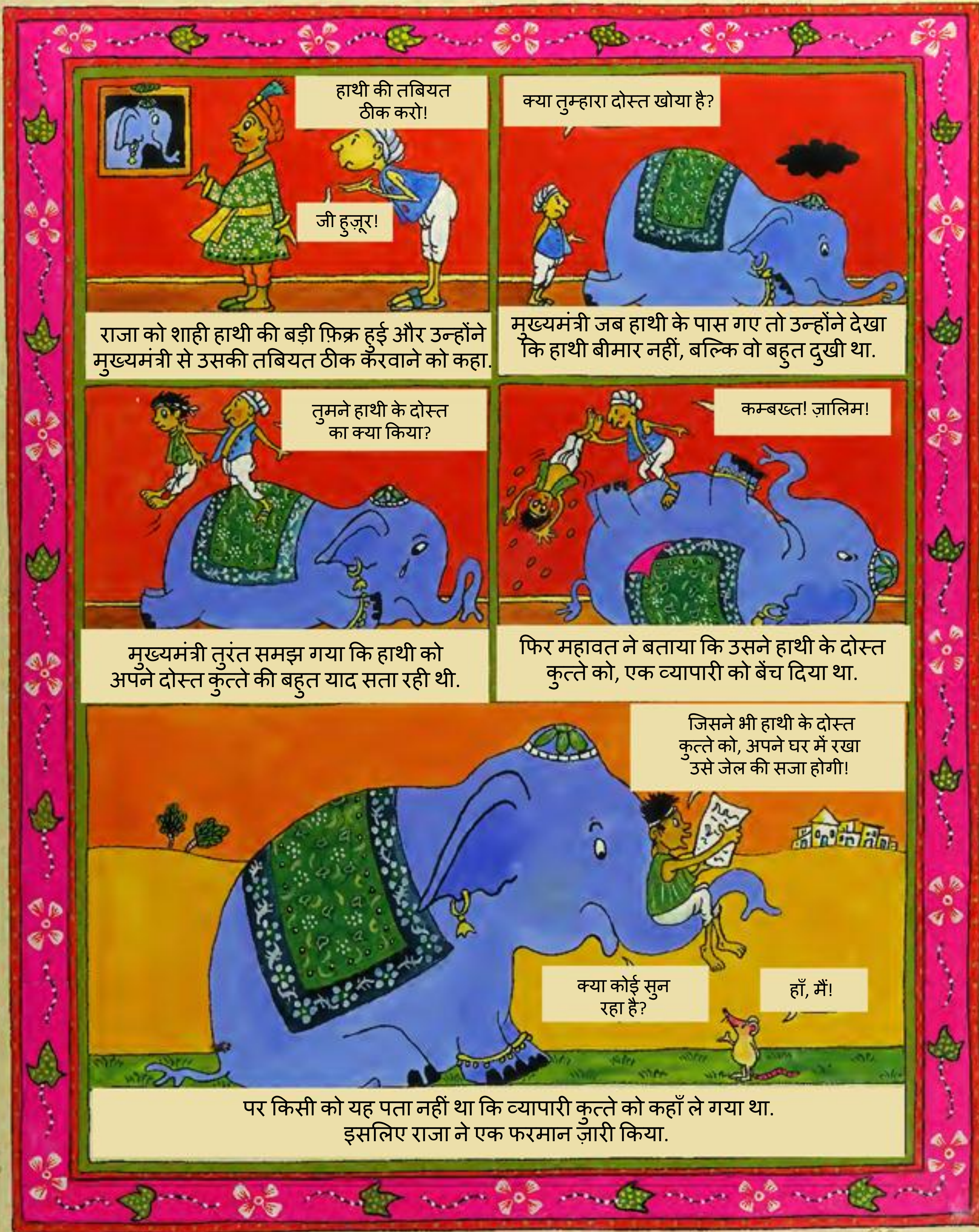
शाही हाथी का दोस्त

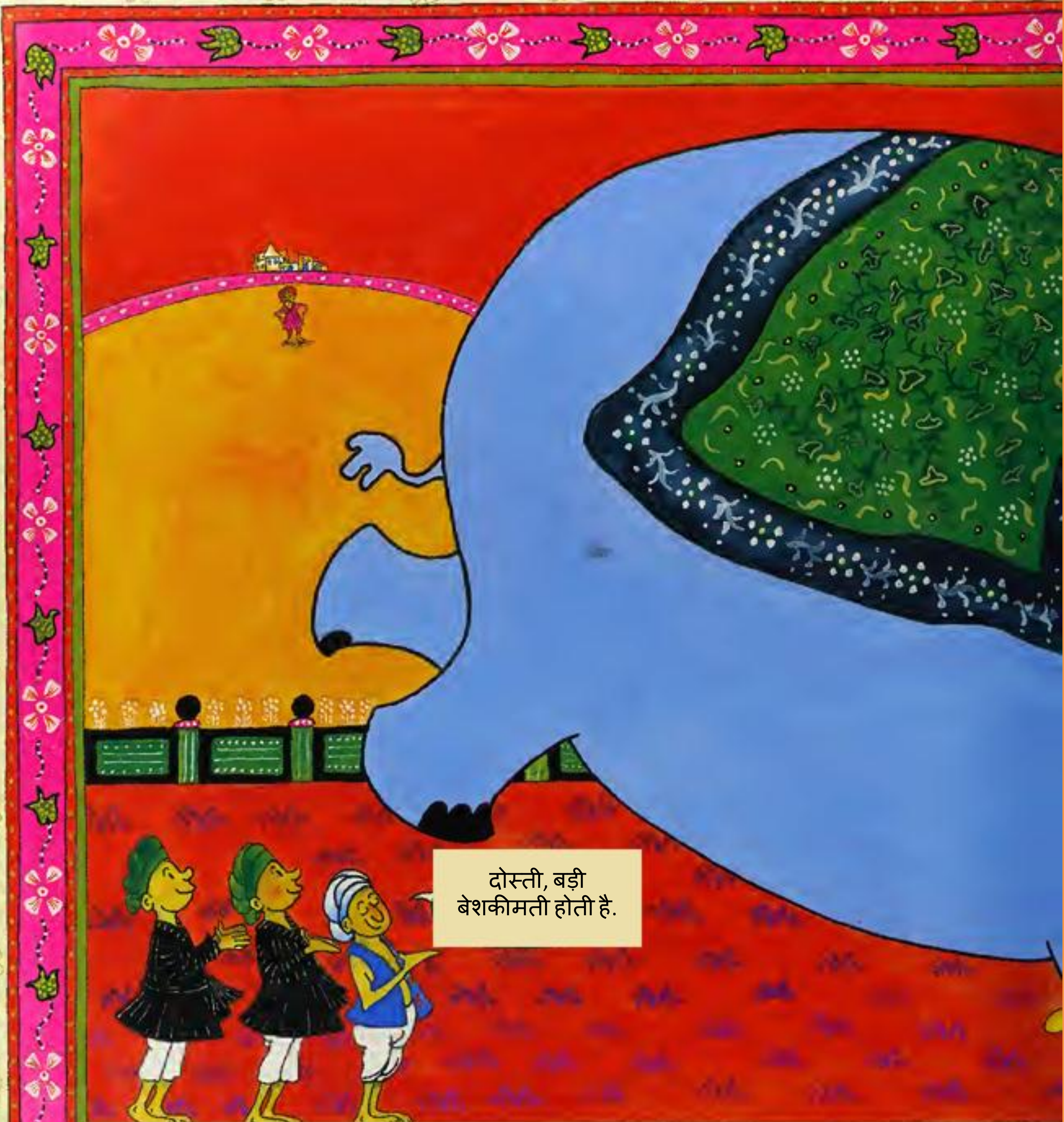
मार्सिआ



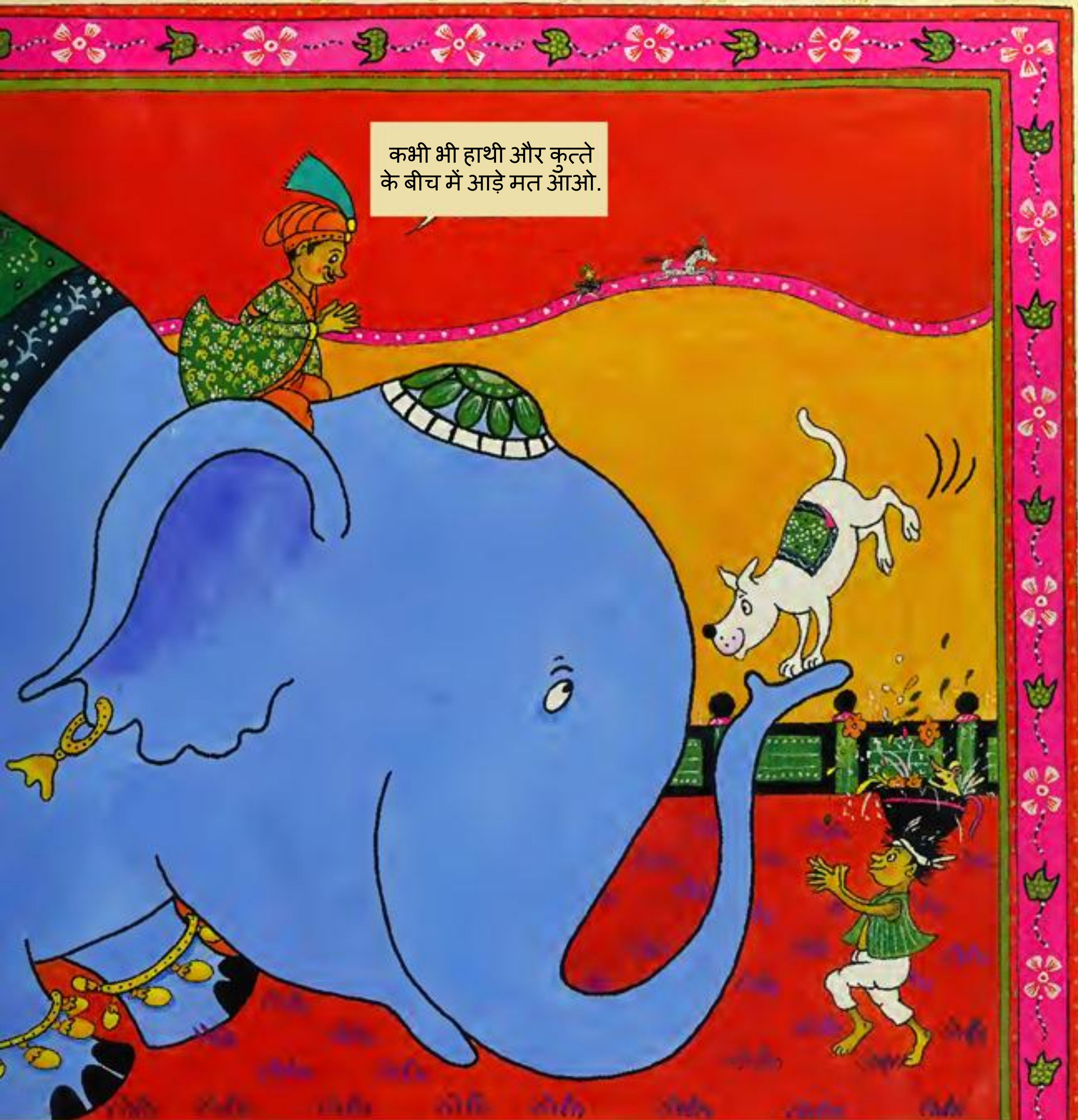

उस दिन से कुत्ता, हाथी के मुंह से
गिरने वाले चावल खाने लगा.
शुरू में पतले, कुत्ते पर किसी का ध्यान नहीं गया.
पर बाद में लोग मोटे, तगड़े कुत्ते को घूरने लगे.
तुम कौन हो?
कुत्ता.
जल्द ही हाथी का ध्यान भी
उस बिना बुलाए मेहमान पर गया!
तुमसे मिलकर ख़ुशी हुई.
मुझे भी!
पर गुस्सा होने की बजाए हाथी खुश हुआ.
उसे एक नया दोस्त मिला था.
खाना और दोस्त!
ज़िंदगी में मुझे और क्या चाहिए!
जल्द ही हाथी और कुत्ते में पक्की दोस्ती हो गई. हाथी अपना खाना और अस्तबल,
कुत्ते के साथ ख़ुशी-ख़ुशी साझा करता था. कुत्ता दिन-रात हाथी के साथ ही रहता था.


मैं अब खुदको नया महसूस कर रहा हूँ.
हर दिन कुत्ते की चमड़ी और चिकनी होती जाती और आँखें और चमकतीं.
यह रही कुत्ते की कीमत!
एक दिन एक व्यापारी ने कुत्ते को खरीदने के लिए महावत को बहुत सारे पैसे दिए.
मैं अपने दोस्त को छोड़कर नहीं जाऊँगा!
देखो! मुझे कोई रोक नहीं सकता है!
फिर अमीर व्यापारी कुत्ते के गले की रस्सी को खींचकर उसे दूर अपने गांव में ले गया.
हाथी के बदन से बदबू आ रही है!
महाराज वो नहाने से मना करता है.
अपने दोस्त के जाने से शाही हाथी का दिल टूट गया.
उसने खाना नहीं खाया, पानी नहीं पिया और नहाने से भी मना किया!


हाथी की तबियत ठीक करो!
जी हुज़ूर!
राजा को शाही हाथी की बड़ी फ़िक्र हुई और उन्होंने मुख्यमंत्री से उसकी तबियत ठीक करवाने को कहा.
क्या तुम्हारा दोस्त खोया है?
मुख्यमंत्री जब हाथी के पास गए तो उन्होंने देखा कि हाथी बीमार नहीं, बल्कि वो बहुत दुखी था.
तुमने हाथी के दोस्त का क्या किया?
मुख्यमंत्री तुरंत समझ गया कि हाथी को अपने दोस्त कुत्ते की बहुत याद सता रही थी.
कम्बख्त! ज़ालिम!
फिर महावत ने बताया कि उसने हाथी के दोस्त कुत्ते को, एक व्यापारी को बेंच दिया था.
जिसने भी हाथी के दोस्त कुत्ते को, अपने घर में रखा उसे जेल की सजा होगी!
क्या कोई सुन रहा है?
हाँ, मैं!
पर किसी को यह पता नहीं था कि व्यापारी कुत्ते को कहाँ ले गया था. इसलिए राजा ने एक फरमान ज़ारी किया.



अंत में राजा का फरमान उस गांव तक पहुंचा जहाँ व्यापारी उस कुत्ते के साथ रहता था. सजा की बात सुनकर व्यापारी बहुत घबरा गया. फिर उसने कुत्ते को अपने घर से निकाला और उसे पहाड़ी के नीचे धकेल दिया. कुत्ता अपनी पूंछ हिलाता हुआ पहाड़ी से नीचे उतरा और सीधा शाही हाथी के पास जा पहुंचा.



फिर हाथी और कुत्ता ख़ुशी से नाचने लगे.
राजा, उसके मंत्री और महावत भी ख़ुशी से तालियां बजाने लगे.
उसके बाद दोनों जिगरी दोस्तों ने अपने बाकी दिन साथ-साथ बिताए.
फिर उन्हें अलग-अलग करने की किसी की कभी हिम्मत नहीं हुई.